खण्ड – I

नोट : इस खण्ड में **बीस-बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ** (500) शब्दों में अपेक्षित है । **($2 \times 20 = 40$ अंक)**

1. तुलसी के सामाजिक-पारिवारिक आदर्श ।

अथवा

कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ ।

2. हिन्दी उपन्यास और स्वाधीनता आन्दोलन ।

अथवा

कॉलरिज का कल्पना सिद्धान्त ।

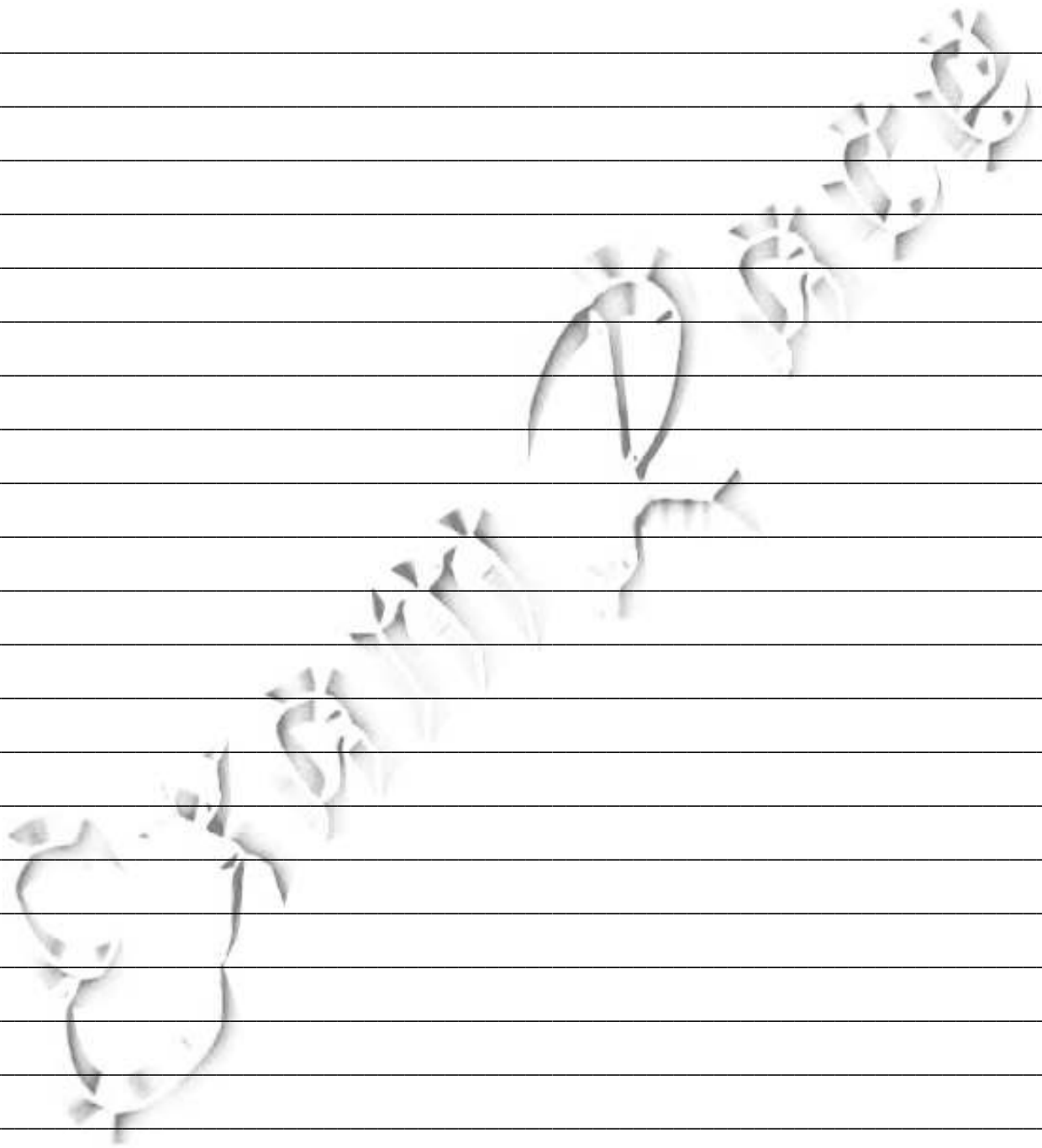

खण्ड – II

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **तीन** (3) प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों के उत्तर देने हैं । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह** (15) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ** (300) शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

ऐच्छिक इकाई – I (भक्ति काव्य)

3. निर्गुण और सगुण भक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए ।

4. कबीर के कवि रूप की चर्चा कीजिए ।

5. सूर के वियोग श्रृंगार पर प्रकाश डालिए ।

ऐच्छिक इकाई – II (छायावाद)

3. छायावाद की काव्य भाषा की समीक्षा कीजिए ।

4. महादेवी के काव्य में व्यक्त रहस्यानुभूति की विवेचना कीजिए ।

5. कामायनी के 'रूपक तत्त्व' का निरूपण कीजिए ।

ऐच्छिक इकाई – III (कथा साहित्य)

3. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में दलित विमर्श के स्वरूप की चर्चा कीजिए ।

4. 'गोदान भारतीय कृषक की संघर्ष जीवन गाथा का जीवन्त दस्तावेज़ है ।' इस कथन के आलोक में 'गोदान' की समीक्षा कीजिए ।

5. समकालीन हिन्दी कहानी के युगबोध का विवेचन कीजिए ।

ऐच्छिक इकाई – IV (काव्यशास्त्र और आलोचना)

3. सहृदय की अवधारणा पर विचार कीजिए ।

4. अरस्तू के विरेचन सिद्धान्त का प्रतिपादन कीजिए ।

5. रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि को समझाइए ।

खण्ड – III

नोट : इस खण्ड में **दस-दस** (10-10) अंकों के **नौ** (9) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास** (50) शब्दों में अपेक्षित है । **($9 \times 10 = 90$ अंक)**

6. सिद्ध साहित्य की विशेषताएँ बताइए ।

7. सिद्ध कीजिए कि 'घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं ।'

8. महादेवी की प्रतीक योजना को स्पष्ट कीजिए ।

9. नागार्जुन की लोक-दृष्टि का विवेचन कीजिए ।

10. कहानी और नई कहानी का अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

11. 'अन्धेर नगरी' की प्रासंगिकता समझाइए ।

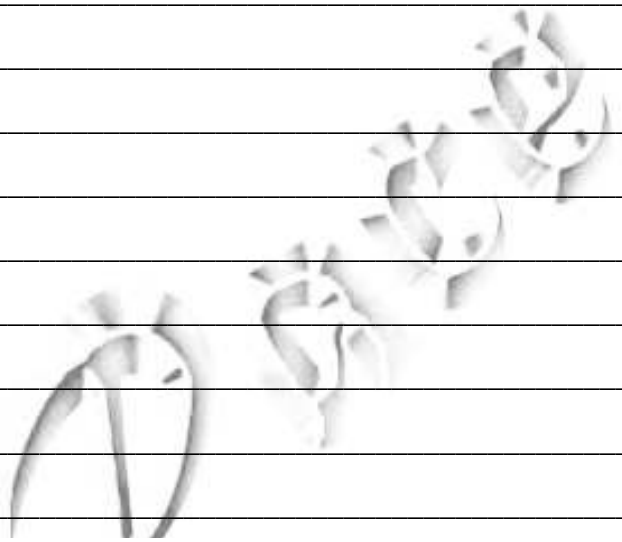

12. ‘औचित्य’ का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

13. रामचन्द्र शुक्ल की निबन्धगत विशेषताएँ बताइए ।

14. क्रोचे के 'अभिव्यंजनावाद' की चर्चा कीजिए ।

खण्ड – IV

नोट : इस खण्ड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है । समाजशास्त्र के पश्चिमी ग्रंथकार कहा करें कि समाज में एक दूसरे की सहायता अपनी-अपनी रक्षा के विचार से की जाती है; यदि ध्यान से देखा जाय तो कर्म-क्षेत्र में परस्पर सहायता की सच्ची उत्तेजना देनेवाली किसी न किसी रूप में करुणा ही दिखाई देगी । मेरा

यह कहना नहीं कि परस्पर की सहायता का परिणाम प्रत्येक का कल्याण नहीं है । मेरे कहने का अभिप्राय है कि संसार में एक-दूसरे की सहायता विवेचना द्वारा निश्चित इस प्रकार के दूरस्थ परिणाम पर दृष्टि रखकर नहीं की जाती, बल्कि मन को स्वत: प्रवृत्त करने वाली प्रेरणा से की जाती है । दूसरे की सहायता करने से अपनी रक्षा की भी सम्भावना है, इस बात का उद्देश्य या ध्यान प्रत्येक, विशेषकर सच्चे सहायक को तो नहीं रहता । ऐसे विस्तृत उद्देश्यों का ध्यान तो विश्वात्मा स्वयं रखती है; वह उसे प्राणियों की बुद्धि ऐसी चंचल और मुण्डे-मुण्डे भिन्न वस्तु के भरोसे नहीं छोड़ती । किसी युग में और किस प्रकार मनुष्यों ने समाज-रक्षा के लिए एक दूसरे की सहायता करने की गोष्ठी की होगी, यह समाजशास्त्र के बहुत से वक्ता लोग ही जानते होंगे । यदि परस्पर सहायता की प्रवृत्ति पुरखों की उस पुरानी पंचायत ही के कारण होती और यदि उसका उद्देश्य वहीं तक होता जहाँ तक समाजशास्त्र के वक्ता बतलाते हैं, तो हमारी दया मोटे, मुसंडे और समर्थ लोगों पर जितनी होती उतनी दीन, अशक्त और अपाहिज लोगों पर नहीं, जिनसे समाज को उतना लाभ नहीं । पर इसका बिल्कुल उल्टा देखने में आता है । दु:खी व्यक्ति जितना ही असहाय और असमर्थ होगा उतना ही अधिक उसके प्रति हमारी करुणा होगी । एक अनाथ अबला को मार खाते देख हमें जितनी करुणा होगी उतनी एक सिपाही या पहलवान को पिटते देख नहीं । इससे स्पष्ट है कि परस्पर सहाय के जो व्यापक उद्देश्य हैं उनको धारण करने वाला मनुष्य का छोटा-सा अन्त:करण नहीं, विश्वात्मा है ।

15. पश्चिमी विचारकों की करुणा सम्बन्धी मान्यता क्या है ?

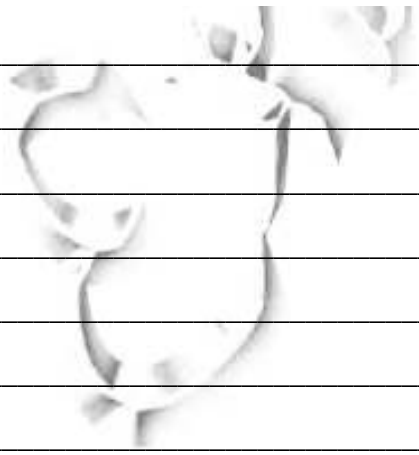

16. सच्चा सहायक किस भाव से करुणा में प्रवृत्त होता है ?

17. 'किसी अनाथ अबला को मार खाते देख हमें जितनी करुणा होगी उतनी एक सिपाही या पहलवान को पिटते देख नहीं होगी' – क्यों ?

18. करुणा के व्यापक उद्देश्य को विश्वात्मा क्यों धारण करता है ?

19. सामाजिक जीवन की स्थिति एवं पुष्टि के लिए करुणा क्यों जरूरी है ?